चढ़ते चढ़ते रंग सनेह, बढ़यो प्रेम रस पूर।
बन जमुना हिरदे चढ़ आए, इन विध हुए हजूर।। १३ ।।

ऐसे सुखों की मस्ती आते-आते, धनी का प्यार, आनन्द तथा प्रेम खूब बढ़ गया जिससे जमुनाजी, वन, आदि सब याद आ गए और ऐसा लगा जैसे हम श्री राजजी महाराज के सामने ही खड़े हों।

पिए हैं सराब प्रेम, छूटे सब बन्धन नेम।
उठ बैठे मांहें धाम, हंस पूछे कुसल खेम।। १४ ।।

परमधाम के प्रेम की मस्ती आने पर संसार के सारे नियम, बन्धन छूट गए। ऐसा लगा कि जैसे हमारी परआतम उठ बैठी हैं और हम आपस में एक दूसरे से हंस-हंस कर हाल-चाल पूछ रहे हैं।

महामत महामद चढ़ी, आयो धाम को अहमद।
साथ छक्यो सब प्रेम में, पोहोंचे पार बेहद।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस खेल में ऐसी मस्ती चढ़ी कि ऐसा लगने लगा कि मैं परमधाम में धनी के सामने हूं और सब सुन्दरसाथ भी प्रेम की मस्ती में डूबा हुआ घर पहुंच गया है।

॥ प्रकरण ॥ ८३ ॥ चौपाई ॥ ११६४ ॥

राग श्री धना श्री

धंन धंन सखी मेरे सोई रे दिन, जिन दिन पिया जी सो हुओ रे मिलन।
धंन धंन सखी मेरे हुई पेहेचान, धंन धंन पिउ पर मैं भई कुरबान।। १ ।।

हे सखी! जब मेरा धनी से मिलन हुआ वह दिन धन्य-धन्य है। जब मुझे धनी की पहचान हुई और मैं धनी पर कुर्बान हो गई वह दिन भी धन्य-धन्य है।

धंन धंन सखी मेरे नेत्र अनियाले, धंन धंन धनी नेत्र मिलाए रसाले।
धंन धंन मुख धनी को सुन्दर, धंन धंन धनी चित चुभायो अन्दर।। २ ।।

हे सखी! मैंने अपने बांके नयनों से श्री राजजी के रसीले नयन मिलाए और इस तरह से धनी का लुभावना मुखारबिन्द मेरे हृदय में चुभ गया, तो मैं धन्य-धन्य हो गई।

धंन धंन धनी के वस्तर भूखन, धंन धंन आतम से न छोडूं एक खिन।
धंन धंन सखी मैं सजे सिनगार,धंन धंन धनिएं मोकों करी अंगीकार।। ३ ।।

हे सखी! श्री राजजी महाराज के वस्त्र-आभूषण धन्य-धन्य हैं जिनको मैं अपनी आत्मा से अलग नहीं कर सकती। धन्य-धन्य वह सिनगार है जो मैंने धनी को रिझाने के लिए धारण किया है। मैं भी धन्य-धन्य हो गई, क्योंकि धनी ने मुझे अंगीकार कर लिया।

धंन धंन सखी मैं सेज बिछाई, धंन धंन धनी मोको कंठ लगाई।
धंन धंन सखी मेरे सोई सायत, धंन धंन विलसी मैं पिउसों आयत।। ४ ।।

हे सखी! मैंने प्रेम में डूबकर सुन्दर सेज्या बिछाई। धनी ने मुझे कण्ठ से लगा लिया। वह समय धन्य-धन्य है जिसमें मैंने पिया से मिलाप का अधिक आनन्द लिया।

धंन धंन सखी मेरी सेज रस भरी, धंन धंन विलास मैं कई विध करी।
धंन धंन सखी मेरे सोई रस रंग, धंन धंन सखी मैं किए स्याम संग।। ५ ।।

हे सखी! मेरी सेज (दिल की तड़प) प्रेम के रस में भरी है। मैंने कई तरह से प्रीतम के साथ आनन्द किया। हे सखी! मुझे वैसा ही आनन्द आया जैसा मैंने श्याम (धनी) के संग आनन्द लिया था। इस तरह के आनन्द लेने से मैं धन्य-धन्य हो गई।

Nijanand App

धंन धंन सखी मोको कहे दिल के सुकन, धंन धंन पायो मैं तासों आनंद घन।
धंन धंन मनोरथ किए पूरन, धंन धंन स्यामें सुख दिए वतन।। ६ ।।

हे सखी! मेरे धनी ने मुझे दिल की बातें बताईं जिससे मुझे बहुत आनन्द आया। धनी ने मेरी सभी इच्छाओं को पूरा किया और श्री राजजी महाराज ने मुझे अखण्ड घर के सुख दिए, इसलिए मैं धन्य-धन्य हो गई।

धंन धंन सखी मेरे पिउ कियो विलास, धंन धंन सखी मेरी पूरी आस।
धंन धंन सखी मैं भई सोहागिन, धंन धंन धनी मुझ पर सनकूल मन।। ७ ।।

हे सखी! मैंने धनी से आनन्द विलास किया और उन्होंने मेरी इच्छा को पूरा किया। इस तरह से मैं सुहागिनी बन गई। धनी ने मुझे प्रसन्न मन से सुहागिनी बनाकर धन्य-धन्य किया।

धंन धंन सखी मेरे मन्दिर सोभित, धंन धंन सरूप सुन्दर प्रेम प्रीत।
धंन धंन चौक चबूतरे सुन्दर, धंन धंन मोहोल झरोखे अन्दर।। ८ ।।

हे सखी! मुझे परमधाम के शोभायमान मन्दिर याद आ गए। धनी के स्वरूप की प्रेम-प्रीति याद आ गई। परमधाम के चौक और चबूतरे याद आए। मोहोलों के अन्दर झरोखों में से झांककर मैं धन्य-धन्य हो गई।

धंन धंन जवेर नकस चित्रामन, धंन धंन देखत कई रंग उतपन।
धंन धंन थंभ गलियां दिवाल, धंन धंन सखियां करें लटकती चाल।। ९ ।।

परमधाम की दीवारों के जवेर (जवाहरात) नक्शकारी के चित्र जिनसे तरह-तरह के रंगों की लहरें निकलती हैं, परमधाम के थंभ, गलियां और दीवारें तथा सखियों की लटकती चाल की याद आते ही मैं धन्य-धन्य हो गई।

धंन धंन सखी मेरे भयो उछरंग, धंन धंन सखियों को बाढ़यो रस रंग।
धंन धंन सखी मैं जोवन मदमाती, धंन धंन धाम धनी सों रंगराती।। १० ।।

हे सखी! इससे मुझे बड़ा आनन्द आया और सुन्दरसाथ में भी खूब प्रेम बढ़ा और मैं यौवन की मस्ती में धनी की अठखेलियों, प्यार भरी चपलता के रंगों में रंगकर धन्य-धन्य हो गई।

धंन धंन साथ मुख नूर रोसन, धंन धंन सुख सदा धाम वतन।
धंन धंन सखी मेरे भूखन झलकार, कौन विध कहूं न पाइए पार।। ११ ।।

हे सखी! अब सुन्दरसाथ के नूरमयी मुख झलक रहे हैं। इनमें परमधाम के अखण्ड सुखों की प्रसन्नता दिखाई देती है। हे सखी! मेरे भूषणों की झलकार अति प्यारी है और किस तरह कहूं वहां बेशुमार सुख हैं जिन्हें पाकर मैं धन्य-धन्य हो गई।

धंन धंन नूर सब में रह्यो भराई, देखे आतम सो मुख कह्यो न जाई।
धंन धंन साथ छक्यो अलमस्त, धंन धंन प्रेम माती महामत।। १२ ।।

प्रेम में अलमस्त बनी हुई श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के अपार सुख सुन्दरसाथ के मुख से झलक रहे हैं। इसका अनुभव आत्मा से होता है। यह कहनी में नहीं आता, क्योंकि मेरे सुन्दरसाथ इश्क की मस्ती में झूम रहे हैं। ऐसा देखकर मैं धन्य-धन्य हो गई।

॥ प्रकरण ॥ ८४ ॥ चौपाई ॥ ११७६ ॥

Nijanand App